

|                            |                     |
|----------------------------|---------------------|
| गालयमानः,                  | जिगालयिषमाणः ;      |
| गालयिष्यमाणः,              | जिगालयिषिष्यमाणः ;  |
| सुगाल-सुगालौ-सुगालः ;      | —                   |
| गालितम्-तः-तवान्,          | जिगालयिषितः-तवान् ; |
| गालः,                      | जिगालयिषुः ;        |
| गालयितव्यम्,               | जिगालयिषितव्यम् ;   |
| गालनीयम्,                  | जिगालयिषणीयम् ;     |
| गाल्यम्,                   | जिगालयिष्यम् ;      |
| ईषद्गालः-दुर्गालः-सुगालः ; | —                   |
| गाल्यमानः,                 | जिगालयिष्यमाणः ;    |
| गालः,                      | जिगालयिषः ;         |
| गालयितुम्,                 | जिगालयिषितुम् ;     |
| गालना,                     | जिगालयिषा ;         |
| गालनम्,                    | जिगालयिषणम् ;       |
| गालयित्वा,                 | जिगालयिषित्वा ;     |
| निगालय,                    | प्रजिगालयिष्य ;     |
| गालम् २, }                 | जिगालयिषम् २ ; }    |
| गालयित्वा २, }             | जिगालयिषित्वा २ }   |

(389) “ गल्भ धाष्ट्ये ” (I-भ्वादि:-392. अक. सेट्. आत्म.)

गल्भकः-लिभका, गल्भकः-लिभका, जिगल्भकः-षिका, जागल्भकः-लिभका ;  
 गल्भिता-त्री, गल्भयिता-त्री, जिगल्भयिता-त्री, जागल्भिता-त्री ;  
 — गल्भयन्-न्ती, गल्भयिष्यन्-न्ती-ती ; —  
 प्रगल्भमानः, <sup>2</sup>अवगल्भमानः, गल्भयमानः, जिगल्भमाणः, जागल्भयमानः ;

1. ‘ आकुस्मादात्मनेपदिनः ’ (ग. सू. चुरादौ) इति आत्मनेपदमेव ।
2. अवगल्भ इवाचरन् = अवगल्भमानः । ‘ आचारेऽवगल्भ-’ (वा. 3-1-11)
- A. ‘ कुत्स्या हि गालनपटा इव कष्टमेते दुष्कीर्तिभालनपराः खलु कूटवृत्त्या ।  
 तद्वच्चनं निरसितुं न हि वर्षिताः स्मः किं कुर्महे खलजना इह मादयन्ताम् ॥’  
 धा. का. 3-36.